UGC Approved Journal
- Research Link

Since March 2002

An International, Registered & Referred Monthly Journal : Drawing
Research Link - 160, Vol - XVI (5), July - 2017, Page No. 99-100
ISSN - 0973-1628 ■ RNI - MPHIN-2002-7041 ■ Impact Factor - 2015 - 2.782

मुगलकाल की चित्रकला (अकबर के विशेष संदर्भ में)

प्रस्तुत शोधपत्र में मुगलकाल की चित्रकला का अध्ययन, अकबर के विशेष संदर्भ में किया गया है। अकबर ने हिन्दू धर्म को बड़ी ही विनम्रता और सादगी के साथ अपनाया था। उसने हिन्दू धार्मिक ग्रंथों और देवी-देवताओं का चित्रण बड़े ही सम्मान के साथ करवाया था। वहीं उसने अपने समय के ग्रंथों की विषय-वस्तु को पर्याप्त विकसित किया था। वाचस्पति गैरोला के अनुसार समाज का शाही पौथीखाना चौबीस हजार हस्तलिखित कलापूर्ण पुस्तकों से सुसज्जित था। ऐतिहासिक महत्व की सचित्र पोथियों की संख्या सैकड़ों में थी। तैमूर वंश से लेकर अकबर के 1577 ई.तक जीवन के वर्णन का चित्रण तारीखे-खानदाने-तैमिरिया ग्रंथ में है। अकबरनामा में अकबर के जीवन की विभिन्न शैली का चित्रण है, जिनमें अधिकांश शिकार व युद्ध सम्बंधी दृश्य है।

डॉ.(श्रीमती) वीणा चौबे

इस्लाम में चित्रकला को प्रोत्साहन मिलने के कारण अनेक उत्कृष्ट कृतियाँ तैयार हुई है। विशेष पवित्र समझी जाने वाली तथा सामन्तों के जीवन एवं इतिहास से सबंधित पुस्तकों को सुन्दर बनाने की प्रति का विकास ईरान में विशेष उपलब्धि पूर्ण मिलता है। ऐतिहासिक पुस्तकों में फिरदोसी कृत ''शहनामा'' का चित्रण कई बार कराया गया, यह शाही इतिहास ग्रन्थ है। ईरान में इस ग्रन्थ को कई बार चित्रित करवाया गया। अकबर ने जिस चित्रकला प्रेम के वशीभूत होकर इस विषयवस्तु को चित्रित करवाया, वही ईरान में चित्रकारों का विषय समाजिक था। धार्मिक विषयों का अभाव था। धार्मिक कट्टरता के कारण धार्मिक ग्रन्थों की रचना नहीं की गई। शाहनामा ऐसी विषय वस्तु थी, जो ईरान और भारत में समय–समय पर चित्रित की जाती रही है।

एक अन्य ऐतिहासिक ग्रन्थ 'हमजानामा' का चित्रण अकबर ने करवाया। यह ग्रन्थ मुहम्मद साहब के समकालीन हमीरहमजा की कहानी पर आधारित है। अकबर ने इन किस्सों की प्रमुख घटनाओं का चित्रण भी कराया था। इसके साथ गद्य रचनाओं के साथ–साथ फारसी भाषा की पद्य रचनाएँ भी चित्रित की गयी। सादित बास्तो के अतिरिक्त गुलिस्तों नामक काव्य संग्रह भी ईरान में चित्रित कराया गया। भारत में इसका चित्रण अकबरी शैली में कराया गया। एक अन्य काव्य रचना हफिज–त–दीवान का चित्रण भी ईरानी लघुचित्रण परम्परा का प्रमुख ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ 1560 ई. में अकबर द्वारा अपने दरबारी चित्रकारों से चित्रित करवाया गया। हाफिज शिराज की शेर–शायरी की पुस्तक है, जिसमें बड़ी–बड़ी समस्याओं का निदान वर्णित है। अकबरकाल में हाफिजत दीवान, अमीर खुसरो दलवी कृत दीवान के समान विभिन्न कवियों द्वारा रचित नसीररूद्दीन पर चित्रण कार्य हुआ, एक अन्य चित्रित ग्रन्थ सिलसिला–ए–महज्जब जो कवि नूरददीन जामी की कृति है।

इरानी चित्रकला में समाजिक और ऐतिहासिक ग्रन्थों के साथ ज्योतिष विज्ञान से सम्बन्धित ग्रन्थों पर भी चित्र बनाये गए। नसीरूद्दीन तोसी त ज्योतिष ग्रन्थ बहुत प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त मुनील अल अहरार वैज्ञानिक आधारित पुस्तक किताब 'अले बुलहन' और 'एन्थोलॉजी ऑफ इस्कन्दर' सुल्तान की पर भी चित्रकारी की गई है। अकबर काल में लगभग सभी विषयों पर चित्र बने हैं। तिलिस्म और राशिचक्र, ज्योतिष विवरणों से सम्बंधित ग्रन्थ है, जिसका अनुवाद व चित्रण अकबर ने अपने दरबारी चित्रकारों से कराया। शिक्षा मूल में भारतीय मूल की पुस्तक 'पंचतंत्र' विश्व प्रसिद्ध पुस्तक है। इसका चित्रण अकबर काल में कई बार हुआ। कलिका और दिम्न्ना के आधार पर अकबर ने एक अन्य अनुवाद 'अबुलफजल' से अयाय ए दर्निश नाम से कराया। पंचतंत्र के इन अनुवादों को बादशाहों ने अपनी रूचि के अनुसार बार–बार चित्रित करवाया है।

पंचतत्र के चित्रण के अतिरिक्त अन्य किसी भारतीय ग्रन्थ का चित्रण इरान की चित्रकला में नगण्य है, परन्तु अकबर ने अपने व्यक्तिगत प्रेम के फलस्वरूप अभारतीय ग्रन्थों के अतिरिक्त अनेक भारतीय ग्रन्थों का फारसी भाषा में अनुवाद करवाया और उन्हें चित्रांत कराया। अब्दुल कादिर बदॉयूनी, अकबर के दरबार में संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान थे, जो अरबी–फारसी भाषाओं का बहुत बड़े ज्ञाता थे। महाभारत का फारसी अनुवाद इसी विद्वान ने 'राज्यनामा' नाम से किया, जिस पर लगभग 50 चित्रकारों ने कड़े परिश्रम से 166 चित्र बनाये, जो तीन बड़ी सचित्र जिल्दों में तैयार किए गए। बसावन, तुलसी, लाल व मिस्कीन आदि चित्रकारों ने इस ग्रन्थ को चित्रित किया। इन चित्रों में इरानी की अपेक्षा राजस्थानी और कश्मीरी शैली का प्रभाव अधिक है। अकबर का समय ग्रन्थ चित्रण का युग था। कई ग्रन्थों में शिव सम्बन्धी चित्र बने हुए हैं। शिव पुराण का अलग से

विभागाध्यक्ष (चित्रकला संकाय), अटल बिहारी हिन्दी विश्वविद्यालय, भोपाल (मध्यप्रदेश)

चित्रण हुआ है, जैसे 'राज्यनामा' में शिव को यज्ञ का यश्र भस्म करते चित्रित किया है। एक अन्य चित्र में अश्स्वथामा द्वारा पॉडवों के पड़ाव में आक्रमण करते हुए दर्शाया गया है। यह रेखा चित्र 1580 ई में दसवन्त द्धारा बनाया गया था। 'अम्बा' शीर्षक चित्र राज्यनामा का ही एक पृष्ठ है, जिसमें अम्बा के चारों ओर कई राजा है। वह स्वयं को अग्नि में भस्म कर लेती है। यह रेखाचित्र लाला द्वारा चित्रित किया गया है। योग वशिष्ठ में शिव–पार्वती का साधु के समक्ष उपस्थित होने का दृश्य प्रस्तुत किया गया है।

भारतीय कथा वस्तु में 'रामायण' एक प्रसिद्ध धार्मिक ग्रन्थ है। इसका अनुवाद भी फारसी भाषा में कराया गया, जिसका चित्रण कार्य 1588 ई में आश्चर्यजनक तथ्य है कि भारतीय मूल की पुस्तक को चित्रित करने में तीन चित्रकारों को छोड़कर शेष चित्रकार मुस्लिम थे, जिन्होंने ग्रन्थ में वर्णित विचारों को हू–ब–हू चित्रों में उतारा और भारतीय प्रभाव से परिपूर्ण किया। रामायण और महाभारत जैसे महान भारतीय धार्मिक गन्थों का अनुवाद कराना, इन पाण्डुलिपियों को चित्रित करना, अकबर की भारतीय भावना का प्रबल उदाहरण है। उसने विभिन्न धर्मों और साहित्य में रूचि के कारण ही हिन्दू धर्म से परिचित कराया और हिन्दू पुराणों और रचनाओं का चित्रण व अनुवाद कराने के लिए प्रेरित किया। अकबर द्धारा चित्रित कराए गए धार्मिक ग्रन्थों के अतिरिक्त कुछ लघु चित्र भी बने, जिनमें एक में गणेश, त्रिनेत्र चर्तुभुज गले में सर्प लपेटे कमल पुष्प पर बैठे हैं। साथ में चारभुजाघरी सरस्वती पालथी मारे बैठी है। ये विद्या की देवी गणपति से वर्तालाप कर रही है। गणेश के पास ही उनकी पत्नी का अंकन है। इस चित्र में 'सीता की अग्नि परीक्षा' का चित्र है, जिसमें ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीनों देवों को खड़े दिखया गया है। यह अत्यन्त सुन्दर चित्र अकबर काल मे चित्रित भारतीय चित्रों की गहनता को दर्शाता है। अकबर के बाद धार्मिक कट्टरवादिता के कारण भारतीय विषयों का चित्रण नहीं हुआ। यह प्रवृत्ति अकबर काल की महान उपलब्धियों में नगण्य है।

अकबर ने हिन्दू धर्म को बड़े ही विनम्र और सादगी से अपनाया था। उसने हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों और देवी–देवताओं का चित्रण बड़े सम्मान के साथ करावाया था। वहीं उसने अपने समय के ग्रन्थों की विषय–वस्तु को पर्याप्त विकसित किया था। वाचस्पति गैरोला के अनुसार समाज का शाही पौथीखाना चौबीस हजार हस्तलिखित कलापूर्ण पुस्तको से सुसज्जित था। ऐतिहासिक महत्व की सचित्र पोथियों की संख्या सैकड़ों में थी। तैमूर वंश से लेकर अकबर के 1577 ई तक जीवन के वर्णन का चित्रण तारीखे–खानदाने–तैमिरिया ग्रन्थ में है, अकबरनामा में अकबर के जीवन की विभन्न शैली का चित्रण है, जिनमें अधिकांश शिकार, युद्ध सम्बंधी दृश्य है। इनके अलावा फतेहपुर सीकरी का निर्माण तमाशा दिखाते अकबर सलीम जन्मोत्सव आदि के अनेक शिष्यों का यथार्थ चित्रण भी इस ग्रन्थ में किया गया है। साथ ही अकबर ने और भी विषयों पर चित्रण कार्य करवाया, जो अकबरकालीन चित्रण के अंतर्गत सम्मलित हैं, जैसे बाबर की अपनी आत्मकथा तुर्की भाषा में लिखी, जिसका फारसी भाषा में अनुवाद अकबर ने करवाया। बाबर के जो शौक थे, उनमें उद्यान लगाना, अपने बागों में दावत का आयोजन, बागों की देख–रेख करना इत्यादि को अकबरकालीन चित्रकारों ने बड़े भावपूर्ण ढंग से चित्रित किया है। इसके अतिरिक्त 'व्यक्ति चित्रण' भी अकबर काल में शुरू हो गया था, जैसे दरबारी नर्तकी, संगीत, वादन आदि की छवियाँ चित्रित करवाई। इसके साथ अकबर ने अपनी स्वयं की छवियाँ बनवाई, जिसमें अकबरकालीन चित्रकारों ने अपनी निपुणता दिखाई है। अकबर को व्यक्ति चित्रों का बड़ा शौक था। स्वयं भी छविचित्रों को तैयार करता था। इस काल के व्यक्ति चित्र सर्वोत्कृष्ट रूप में मिलते हैं, जिनकी विशेषता चेहरे के 'भावार्थ और सच्चाई' है।

अकबरकालीन चित्रों के महत्वपूर्ण विषयों में पेड़, पौधे और पशुपक्षी आदि का एक महत्वपूर्ण स्थान है। एक अन्य महत्वपूर्ण आकर्षण विभिन्न श्रेणियों में व्यक्तियों का प्रस्तुतिकरण है, जिसे अकबर के चित्रकारों ने अपने चित्रों में प्रस्तुत किया है। सूफी सन्तों का चित्रण भी अकबरी चित्रो में दृष्टिगोचर होता है। अकबर स्वयं सूफी सन्तों का बहुत आदर करता था।

अकबरकालीन चित्रकला भिन्न–भिन्न चित्रों की कला थी, जिसमें अधिकतर लघु पुस्तक चित्रण हुआ है। अकबरकालीन चित्रकारों ने छवि चित्रों में विशेष सफलता प्राप्त की थी।

प्रत्येक युग में चित्रसृजन चित्रकार की अपनी कलात्मक अभिव्यकित व आवश्यक्ता के परिणामस्वरूप होता रहा है। सभी देशों में कला का अपना स्त्रोत निरन्तर होते हुए निर्विवाद रूप में विकसित हुआ है, इसी विकास के फलस्वरूप सभी के साथ–साथ विषयवस्तु में भी परिवर्तन हुआ। इस परिर्वतन का कारण समय के अनुसार उपलब्ध साधनों में भिन्नता होना है। इन भिन्नताओं में देश काल परिस्थितियाँ भी सम्मिलित हैं और इन सभी विभिन्नताओं का सम्मिश्रण युगल कला में अकबरकालीन इस्लामिक चित्र रचनाओं में भरपूर देखने को मिलता है।

अकबरकाल में यथार्थ विषयों को प्रमुखता दी गई। काल्पनिक विषय नगण्य रहे। इस काल में विषयवस्तु असीमित थी। इस समय भारतीय, अभारतीय ग्रन्थों, ऐतिहासिक विषय, व्यक्ति, चित्र, पेड़, पौधे, पशु–पक्षियों, यूरोपियन विषयों आदि सभी का चित्रण सफलतापूर्वक हुआ।

संदर्भ :

(1) गुप्ता, लक्ष्मीनाराण : मुगलकालीन भारत, आगरा।

(2) *अरोड़ा, एस.सी. : मध्ययुगीन भारत का इतिहास, जालधर।*

(3) *अग्रवाल, गिरिराजकिशोर : रूपंकर, द्वितीय संस्करण, अलीगढ़।*

(4) *अशोक : इरान की चित्रकला, ललितकला प्रकाशन, अलीगढ़।*

(5) *शर्मा एवं अग्रवाल : रूपप्रद काल के मूलाधार, मेरठ।*

❁❁